

डाइन

डाइन, डाइन, डाइन
 सुनते-सुनते पाकल कान
 बड़का-बड़का दाँत रहे
 लंबा लाल जीउ रहे
 जंतर-मंतर जानोही
 मुड़े जट बढ़ावोही
 कांचे मांस कचरही
 गीदरेक खुइन चुसोही
 अमावसियाक रात्ती देखा
 चौबटियें नंगटे भइकें
 डांड़ाइ बोड़नी बाइंध के
 करिया बिलाइर लइकें
 नाचोही-गावोही।
 एकरें कोपे महामारी
 कलेरा, माज दरसन होवेहे
 देबी माज एखिनेक उपर
 बतर देख सवार होवोही
 डाइन, डाइन, डाइन
 सुनते-सुनते पाकल कान।
 ऐ रे बोका मानुस।
 एकर भेउ टा जान
 मगज तनी खाटाइ के
 बुइधेक गाली गुचाइकें
 पहिले जान तबे माने
 बेटिक फेंकला चुल्हाक पास

बिन जानले काहे माने।
 बिन कारने कोन्हों घटना
 घटे नाज पारे
 सबले बोड़ कारन
 मानुसे हवे पारे।
 समाजेक सगरगाड़ी
 जनी-मरद दूगो चाक
 मुदा, जनिक चाक।
 टूटल-टाटल घंसरल चले
 आर मरदेक गाड़ी देखा
 गरगराइल अगुवाइल चले।
 मरद करथ जनिक ऊपर
 कते अतियाचार
 चाँद-सुखज साखी हथ
 धरती माज लाचार
 मरदें बनवल जनी के
 छउवा जनमवेक मिसिन
 जइसें कोन्हों जिनिस होवे
 पेठिया से आनला कीन।
 जनिक ऊपर माइर-गारी
 लाइत-जूता, पाहुरेक दान
 जनिक अबला कैह
 करला मरदे ‘अपमान’
 बी. ए. एम. ए. बेटा पास
 गरीब नारी के बनवला डाइन।

ककरो वेटी गोबोर कढ़नी
 कहूँ वेटी भेल नचनी
 जनी खातिर सतीप्रथा
 बनवला कहीं रंडीखाना
 मरद खातिर ई जगते
 न सताप्रथा न रंडाखाना।
 जनी मोरले मरद देखा
 दोसर बिहा करे
 मुदा, मरद मोइर गेले
 जनी राँड़े भइके मोरे।
 जनिक गुलाम बनवे खातिर
 मरद बनवला डीहें डाइन।
 सिरजनकारिनी नारी
 कि हवे पारे डाइन।
 डाइन बनवेक चाइर गो कारन-
 “गरीबी, अधबइसु, असिकच्छा,
 काना पतियार समाज।
 अमीर, राजा, जर्मीदारेक
 माज, बहुक के कहतइ डाइन
 ककर दूगो मुड़ हइ
 जे एकरां देतइ माइन
 जे एकरां देतइ माइन।
 पढ़ल-लिखल नारी के
 कहभक भला डाइन?
 कानापतियार समाजें

गातें जकर बोल हइ
 डीहें रंगदारी हइ
 गावें जर्मीदारी हइ
 जे कोरही करम कांधी हके
 परेक अरजन खनिहार हके
 बोकोस,
 ओझा, गुनिक नावें
 मानुस के ठकनिहार हके
 मानुस रूप ई सइतान
 इमान बेचे ई बइमान
 एकरे मारीं डीहें डाइन
 कानापतियारें देहथ माइन।
 ए रे मानुस।
 मानुसें कि मानुस खाइ?
 ई जुगे कि भूत पावाइ?
 काहे सतावे नारी के
 माज अइसन प्यारी के
 परेक माज तोर माज
 सिरजनकारिनी हवे माज
 मरद ले बोड़ जनी हवे
 ई जगतेक मनी हवे
 जनी के मान देवे जान
 तबे बाढ़त समाजेक सान

